Volume 1; Issue 2
April to Jun 2025

E-ISSN: 3048-8699

International Journal of History and Culture

Peer Review Indexed Refereed Journal

Quarterly International Research Journal

International Journal of History and Culture
E-ISSN: 3048-8699
https://www.journalofhistory.in/
Volume 1; Issue 2; April to Jun 2025; Page No. 17-27
Peer Review, Indexed and Refereed Journal
Received Date: 25-05-2025, Accepted Date: 28-06-2025
Published Date: 30-06-2025

आहत मुद्राओं में पर्यावरणीय संचेतना और संरक्षण : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. जमील अहमद
असिस्टेंट प्रोफेसेर
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,
ईश्वर शरण पी० जी० कालेज,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उ०प्र०

मिन्हाज अमीन
शोध छात्र
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,
ईश्वर शरण पी० जी० कालेज,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उ०प्र०

सारांश

भारत में मुद्राओं के निर्माण का प्रारम्भ छठवीं शताब्दी ईसवी पूर्व से माना जाता है, जो व्यापारिक उद्देश्य हेतु व्यापारिक वर्ग अथवा श्रेणियों द्वारा प्रारम्भ की गई थीं। प्रारम्भिक निर्मित सिक्कों को 'आहत मुद्रा' के नाम से जाना जाता है। आहत मुद्राओं का निर्माण आमतौर पर चाँदी या ताँबे की धातु द्वारा किया जाता था, जो आकार में मुख्यतः आयताकार थी, परन्तु अल्प रूप से गोलाकार एवं चौकोर मुद्राएँ भी प्रकाश में आई हैं। यह शोध पत्र आहत मुद्राओं पर अंकित प्रतीक-चिह्नों के विश्लेषण, पर्यावरणीय प्रतीक-चिह्नों की पहचान, क्षेत्रीय विविधता और प्रतीक-चिह्न, तथा धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव के विषयों पर केंद्रित है। आहत मुद्राओं पर सामान्य रूप से

प्राकृतिक महत्त्व के ही प्रतीक-चिन्हों का अंकन प्राप्त होता है। ये प्रतीक-चिन्ह न केवल मुद्राओं की सुन्दरता के निमित्त अंकित किए जाते रहे हैं, अपितु इनके माध्यम से मुद्रा-निर्माण प्रणाली, जारीकर्ता समाज के विचारों एवं अभिव्यक्ति तथा काल-विशेष के सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक आयामों की सूचना के साथ-साथ प्राचीन भारतीय समाज की पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा संरक्षण की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

मुख्य शब्द:-*1. आहत मुद्रा, 2. प्रतीक चिन्ह, 3. पर्यावरणीय संरक्षण, 4. जैविक चेतना, 5. आध्यात्मिक नैतिकता*

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास को जानने व समझने के मुख्य साधन के रूप में मुद्रा अथवा सिक्के अन्य स्रोतों की तुलना में सबसे सटीक व प्रामाणिक स्रोत के रूप में अपनी अभिन्न उपस्थिति को दर्शाते हैं। जहाँ एक ओर सिक्कों पर अंकित आलेखों की सहायता से ऐसे नवीन तथ्य प्रकाश में आए हैं, जो पूर्व की प्रचलित धारणाओं या जानकारी के सम्मुख विरोध की स्थिति में विराजित होते हैं तो वहीं दूसरी ओर टंकित चिन्हों व प्रतीकों के माध्यम से तात्कालिक समाज की कला, कुशलता एवं सौन्दर्य बोध का परिचय कराते हैं (गुप्ता, 2014, पृ. 01)। मुद्राओं की प्राप्ति स्तर तथा निखातों से वहाँ के राजनैतिक और भौगोलिक इतिहास को प्रकाश में लाया गया है, जिससे व्यापार-वाणिज्य, यातायात एवं व्यापार-मार्ग तथा केन्द्रों की महत्वपूर्ण सूचना प्राप्त होती है (गुप्ता, 2014, पृ. 16)। मानव जीवन के स्थाई निवास के फलस्वरुप समुदायों के मध्य क्रमशः प्राविधिक ज्ञान का भी आदान-प्रदान होने लगा (चाइल्ड, 2024, पृ. 62)। स्पेंसर के विचार से वस्तु-विनिमय का प्रारम्भिक रूप जंगली जातियों के बीच उपहारों के आदान-प्रदान के रूप में अवस्थित था (निहारिका, 2017, पृ. 211)। बदलौन की प्रक्रिया (बार्टर सिस्टम) का आरम्भ नवपाषाण युग में मानव के स्थिर जीवन-पद्धति एवं कृषि को अपनाने के साथ हुआ होगा। आखेटक मानव, मांस और खाल के बदले पाषाणिक औजार एवं औजार बनाने योग्य पत्थरों का आदान-प्रदान करता था (गुप्ता, 2014, पृ. 02)। फसल, मांस एवं औजारों के आदान-प्रदान से आगे बढ़कर ग्रामीण-समाज के विनिमय का आधार पशुओं ने ले लिया। अतः विनिमय हेतु जो पदार्थ उपयुक्त था, वही माध्यम बन गया। प्राचीन भारतीय आहत मुद्राओं पर अंकित लांछनों पर पशु-पक्षी, पुष्प, पर्वत, तथा ज्यामितीय चिन्ह इत्यादि का अंकन तात्कालिक समाज के पर्यावरण के प्रति जागरूकता को उजागर करता है।

औदुम्बर, कुणिन्द, मालव, यौधेय, अर्जुनायन आदि गणराज्यों के साथ-साथ अयोध्या, कौशाम्बी, मथुरा, पांचाल इत्यादि जनपदीय राज्यों के सिक्कों पर वृक्ष अथवा वेदिका से घिरे वृक्षों का अंकन प्राप्त होता है। मुद्राओं पर धार्मिक अंकन का उदाहरण सिंधु घाटी से प्राप्त उस मुद्रा को माना जा सकता है जिसके उदर भाग से वृक्ष को उदित होता दिखाया गया है, जिसे पृथ्वी माता की संज्ञा दी जाती है। मजूमदार (2015) के शब्दों में इसे पृथ्वी देवी की प्रतिमा बताई गयी है (पृ. 187)। जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रत्येक भारतीय का जीवन ज्ञानगर्भित, सदाचारित और धर्म प्रवण रहा है। उसके समस्त कर्तव्य और कर्म, ज्ञान समवनित और ऋदा-सिक्त होकर धर्म से ही उत्प्रेरित और गतिमान होते थे, जो समाज और उसके परिवार को गठित करने में अभूतपूर्व योग प्रदान करते थे (मैक्सवेबर, 1999, पृ. 53-54)। पांचाल जनपद की मुद्राओं के पुरोभाग पर शासक का नाम एवं पृष्ठ भाग पर शासक नाम से साम्यता रखने वाले देवता का अंकन है तथा तीन पांचाल चिन्हों में से एक वेदिका से घिरा वृक्ष भी है (गुप्ता, 2014, पृ. 194)। इसी प्रकार कुणिन्द शासकों की मुद्राओं पर लक्ष्मी का प्रारम्भिक अंकन प्राप्त होता है। लक्ष्मी के साथ वृक्ष का अंकन ब्रह्ममित्र, सूर्यमित्र और शिवदत्त, के सिक्कों पर भी मिलता है (राजवन्त राव व प्रदीप कुमार राव, 2004, पृ0. 57)। मथुरा से प्राप्त मुद्राओं में गोमित्र तृतीय की मुद्रा पर लक्ष्मी के साथ वृक्ष का अंकन प्राप्त होता है एवं नीचे अंकित नदी में पाँच मछलियां भी स्पष्ट होती हैं, अंकित वृक्ष की साम्यता कदम्ब वृक्ष से की जाती है (एलन, 1967, पृ0. 108)। मुद्राओं में अंकित सैंधव काल से प्राप्त मुहरों पर मातृदेवी एवं पशुपतिनाथ प्रतीक से लेकर ऐतिहासिक काल के विभिन्न वंशों की मुद्राओं पर अंकित प्रतीक-चिन्हों में शासकों की धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहचान परिलक्षित होती है।

प्राचीन सभ्यताओं से लेकर आधुनिक समय तक मुद्राओं पर विभिन्न प्रकार के चित्र और प्रतीक अंकित किए गए हैं, जो हमारे समाज के मूल्य और प्राथमिकता को दर्शाते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब पर्यावरण संरक्षण और स्थायित्व के मुद्दे पूरी दुनिया में चर्चा के केंद्र में हैं, तो यह जानना दिलचस्प है कि प्राचीन सभ्यताएँ भी पर्यावरण के प्रति सचेत थीं।

आहत मुद्राओं पर अंकित प्रतीक चिन्हों में पर्यावरणीय महत्व के अंकित बिंबों अथवा टंकणों के अध्ययन तथा उनके महत्व को समझने हेतु निम्नलिखित सारिणी को दर्शाया गया है;

सारिणी : पर्यावरणीय प्रतीक-चिन्हों की पहचान

क्षेत्र	अंकित प्राकृतिक प्रतीक-चिन्ह	मुहरें / सिक्के
मोहनजोदड़ो	एक शृंगी बैल, पशुपतिनाथ सादृश्य आकृति तथा चारो ओर वृषभ, बाघ, हाथी, गैंडा तथा हिरण	
अश्मक	हाथी, वृक्ष, तथा दो अलंकृत ट्रेस्केलिस	
शाही मगध	टॉरिन से घिरा हुआ दाईं ओर मुँह किए हुए खरगोश, ताड़ का पेड़, हाथी, छह भुजाओं वाला प्रतीक	
शाही मगध	सूर्य, छह भुजाओं वाला प्रतीक, रेलिंग में पेड़ को कुतरता हुआ हिरण/बैल, कैडुसियस	

शाही मगध	अलग-अलग पंच की गई तीन मानव आकृतियाँ	
कोसल	श्रेणियों के निशान, पुष्प सदृश्य आकृति, चारों ओर अर्धचंद्र के साथ ठोस वृत्त	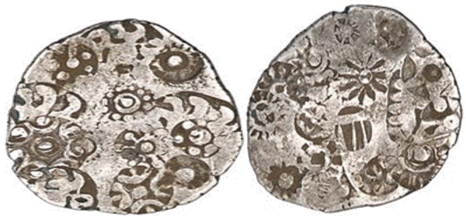
पांचाल	पुष्प आकृति, मत्स्य, वृषभ, गज, सूर्य, अग्नि, नन्दि-पद, नाग	
शूरशेन	मत्स्य तथा सिंह	

गांधार	दोनों सिरों पर दो 'सूर्य' अंकन तथा बीच में बैंकर का चिह्न	
मल्ल	पंचकोणीय प्रतीक तथा श्रेणियों के निशान	
चेदि	हाथी, बैल, तथा हल का फाल	
शाक्य	पंचकोणीय प्रतीक-चिन्ह तथा श्रेणियों के निशान	
एरच नगर	पांच वृत्त, वेदिका में वृक्ष, सुसज्जित अश्व, इंद्रध्वज, उज्जैन चिन्ह	

यौधेय गण	नन्दिपद, गज, बोधिवृक्ष, पर्वत, हिरण, कमल, मोर	
कुणिन्द गण	कमलासीन लक्ष्मी, मृग, चक्र, सुमेरु, नन्दि, बोधि-वृक्ष	
औदुम्बर गण	हाथी, वृषभ, कमल, त्रिशूल, घेरे में वृक्ष	

सारिणी : मुद्रा-चित्र सादर आभार :- **1.** मोहनजोदड़ो - भारतीय रिजर्व बैंक-संग्रहालय, **2.** कोसल, पांचाल, शूरशेन, शाक्य - द क्वायन इंडिया, **3.** अश्मक, शाही मगध, गांधार, मल्ल, चेदि, एरच - क्लासिकल न्यूमिस्मेटिक्स गैलरी, **4.** यौधेय - एन्शियन्ट इंडियन क्वायन्स कलेक्शन, **5.** कुणिन्द - हिमवान: कला एवं संस्कृति, **6.** औदुम्बर - विकिपीडिया

मुद्राओं पर अंकित प्रतीक-चिन्हों का विश्लेषण

मानव जीवन के बौद्धिक प्रारम्भ से ही प्रतीकों अथवा भावों के निर्माण की शुरुआत होती है। आदिम युग में गुफाओं तथा चट्टानों में इनके अंकन इस बात के द्योतक हैं कि आरम्भ से ही मानव जाति ने अपने भावों, विचारों को प्रतीक व चिन्हों के अंकन द्वारा बताना प्रारम्भ कर दिया था। परिपूर्णानन्द वर्मा (2006) के शब्दानुसार, प्रतीकों

की दुनिया काफी जटिल होने के बावजूद रोचक है और व्यापक इतनी कि इसमें चाहे संस्कृति हो या दर्शन, साहित्य हो या कला, विज्ञान हो या अन्य शास्त्र सभी इसकी अनन्त सीमाओं में समाहित है (पृ. 23)। हैरण्यिक (रूप-परीक्षक) सिक्कों को देखते ही बता सकता है कि कौन-सा सिक्का किस ग्राम, नगर, पर्वत अथवा नदी-तट का है और उसे बनाने वाला टकसाल कौन सा था (विशुद्धिमग्ग, परिच्छेद 14)।

- **धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतीक चिन्हः-**

जीयस, नाइके, शिव, कार्तिकेय, विष्णु, लक्ष्मी, बुद्ध, चक्र, सूर्य, चंद्र, षडष, चैत्य एवं स्तूप, देवी-देवताओं के वाहन यथा- वृषभ, मयूर, गरुड़ इत्यादि तथा सांस्कृतिक प्रतीकों में लंबा कोट एवं पजामा, सिंह-निहंता एवं वीणा-वादक प्रकार की मुद्रा का अंकन इत्यादि।

- **आर्थिक एवं राजनैतिक प्रतीक चिन्हः-**

व्यापारिक-मार्ग तथा व्यापारिक-केंद्र, सिक्कों में प्रयुक्त धातु (सोना, चांदी, तांबा, प्रोटीन इत्यादि) तथा शासकों की मुण्ड-आकृति एवं सम्पूर्ण छवि; धनुर्धारी प्रकार, अश्वमेध प्रकार, सिंहनिहंता एवं ध्वजधारी प्रकार का अंकन तथा उज्जैन चिन्ह, चंद्र एवं मयूर, गरुण इत्यादि का अंकन एवं पुर्नटंकित प्रकार के सिक्के, राजनैतिक अंकनों की पुष्टि करता है।

- **प्राकृतिक प्रतीक चिन्हः-**

आहत मुद्राओं पर अंकित प्रतीक-चिन्हों में प्रमुखतः प्राकृतिक महत्व के चित्र दृष्टिगोचर होते हैं; यथा- पेड़-पौधे, पुष्प, पत्तियां, सूर्य, चंद्र, मेरू इत्यादि।

पशुओं में - वृषभ, ऊंट, हाथी, अश्व, खरगोश, हिरण इत्यादि।

पक्षियों में - गरुण, गिद्ध, मुर्गा, मोर इत्यादि।

जलीय जीव - मत्स्य, सर्प, कछुआ इत्यादि।

मुद्राओं पर अंकित पर्यावरणीय प्रतीक प्रकृति के प्रति सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक लगाव को व्यक्त करते हैं । ये प्रतीक सामाजिक स्तर पर पर्यावरणीय संसाधनों, जैसे वन, जल, और जैव विविधता, के संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करते हैं (गुप्ता, 1969, पृ. 45)। आहत मुद्राओं पर प्राकृतिक चिन्हों का चयन वैदिक, बौद्ध, और जैन दर्शन से प्रेरित था, जो प्रकृति के साथ सामंजस्य, संयम और अहिंसा को महत्व देते हैं । ये प्रतीक समाज में पर्यावरणीय नैतिकता को सुदृढ़ करते हैं, जैसे प्रकृति के प्रति सम्मान और संयमित संसाधन उपयोग (झा, 2018, पृ. 93)। यथा - सूर्य और चंद्रमा जैसे प्राकृतिक चिन्ह प्रकृति की चक्रीयता और संतुलन को दर्शाते हैं, जो समाज को जैविक चेतना की ओर प्रेरित करते हैं। इसी प्रकार, चैपल (2000), उल्लेख करता है कि जैन और बौद्ध परंपराओं में अहिंसा का सिद्धांत पर्यावरण संरक्षण

का आधार था, जो आहत मुद्राओं के प्रतीकों में परिलक्षित होता है (पृ. 112)। यह आध्यात्मिकता और पर्यावरणीय नैतिकता का समन्वय, प्राचीन भारत की पर्यावरणीय संचेतना का मूल था। कोसंबी (1956) के अनुसार धातु खनन और सिक्का निर्माण में सावधानी बरती जाती थी ताकि पर्यावरणीय क्षति, जैसे मिट्टी का कटाव और वन विनाश, को न्यूनतम रखा जाए (पृ. 150)। केनोयर (1998) के पुरातात्विक शोध से स्पष्ट है कि, हड़प्पा सभ्यता में भी धातु उपयोग में संयम बरता जाता था, जो आहत मुद्राओं के निर्माण में निरंतरता को दर्शाता है (पृ. 89)। इस प्रकार के विचार प्राचीन भारतीय समाज की पर्यावरण के प्रति नैतिक जिम्मेदारी एवं संरक्षण को दर्शाते हैं। अर्थशास्त्र में मुद्रा निर्माण-विधि, धातु प्रयोग एवं प्रयुक्त सामाग्री का विवरण मिलता है। रंगराजन (1992), कौटिल्य के अर्थशास्त्र में खनन, वन प्रबंधन, और कृषि के लिए कड़े नियमों के उल्लेख की चर्चा करते हैं, जो संसाधनों के टिकाऊ उपयोग को सुनिश्चित करते थे (पृ. 234)। मौर्य काल में वन और जल संसाधनों के संरक्षण के लिए राजकीय नीतियां लागू की गई थीं, जो आहत मुद्राओं के माध्यम से आर्थिक लेन-देन द्वारा समर्थित थीं (थापर, 2013, पृ. 156)।नीतियों को लागू करने का उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों के अति-दोहन को रोकना जान पड़ता है, ताकि पर्यावरणीय संतुलन और मुद्रा-निर्माण हेतु प्रयुक्त धातुओं के दोहन के मध्य सामंजस्य बना रहे। आहत मुद्राओं पर अंकित पर्यावरणीय प्रतीकों का अध्ययन आधुनिक युग में पर्यावरणीय संरक्षण और संचेतना के प्रति जागरूकता प्रदान करता है। गडगिल और गुहा (2013) के अनुसार, प्राचीन भारतीय सामुदायिक संसाधन प्रबंधन की प्रथाएं आधुनिक पर्यावरणीय नीतियों के लिए उपयोगी हैं (पृ. 201)। अंतर-सरकारी पैनल जलवायु परिवर्तन (2022) ने भी प्राचीन ज्ञान को आधुनिक नीतियों, जैसे स्वच्छ भारत अभियान और नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों, के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल दिया है (पृ. 45)।

निष्कर्ष

मुद्राएँ विभिन्न गणराज्यों, जनपदों तथा महाजनपदों से होते हुए मौर्यकाल के राजकीय संरक्षण में अपने मानक रूप को प्राप्त करती हैं। भारत में सर्वप्रथम निर्मित आहत सिक्कों में किसी प्रकार के लेख की सूचना प्राप्त नहीं होती बल्कि, केवल अनेकों प्रकार के प्रतीक-चिन्हों का अंकन दिखाई देता है यथा- पशु-पक्षी, पेड़-पत्तियां, मानव, फूल, पर्वत, नदियां, सूर्य एवं विभिन्न ज्यामितीय-आकृतियां इत्यादि। प्रस्तुत शोध-पत्र में मुद्राओं पर अंकित प्राकृतिक प्रतीक-चिन्हों के विश्लेषण से इस

बात की पुष्टि होती है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति में पर्यावरणीय चेतना और संरक्षण का गहरा सम्बन्ध रहा है, जो विभिन्न धार्मिक-ग्रन्थों, परम्पराओं और दैनिक जीवन में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। भारतीय मनीषियों ने प्रकृति को देवतुल्य मानते हुए उसके संरक्षण पर विशेष जोर दिया है। प्राचीन भारतीय आहत मुद्राएं आर्थिक लेनदेन के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण और संचेतना के प्रति प्राचीन भारतीय समाज की गहरी प्रतिबद्धता का प्रतीक थीं। प्राकृतिक प्रतीकों के माध्यम से जागरूकता का प्रसार, संसाधनों का सीमित एवं नियंत्रित प्रबंधन, सामुदायिक सहभागिता तथा आध्यात्मिक नैतिकता ने पर्यावरणीय सामंजस्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्राचीन भारत का यह दृष्टिकोण आधुनिक पर्यावरणीय संकटों, जैसे जलवायु परिवर्तन और संसाधन ह्रास, के समाधान के लिए प्रेरणा प्रदान करता है। प्राचीन पर्यावरणीय ज्ञान को आधुनिक तकनीकों और नीतियों के साथ एकीकृत करके, एक टिकाऊ, समावेशी, और संतुलित समाज के निर्माण के साथ-साथ आधुनिक विश्व को हरित अर्थव्यवस्था, अपशिष्ट न्यूनीकरण, और जैव विविधता संरक्षण की दिशा में प्रेरित किया जा सकता है। आहत मुद्राओं का यह अध्ययन ऐतिहासिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से न केवल महत्वपूर्ण है, बल्कि वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय संचेतना को प्रोत्साहित करने के लिए भी एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. गुप्ता, पी. एल। (2014)। भारत के पूर्वकालिक सिक्के । विश्वविद्यालय प्रकाशन।
2. चाइल्ड, वि. जी। (2024)। *व्हाट हैपेन्ड इन हिस्ट्री* । मनोहर प्रकाशन।
3. निहारिका। (2017)। प्राचीन भारतीय पुरातत्व अभिलेख एवं मुद्राएँ । विश्वविद्यालय प्रकाशन।
4. मजूमदार, आर. सी। (2015)। *दि वैदिक ऐज* । भारतीय विद्या भवन।
5. वेबर, मैक्स। (1999)। *रिलीजन ऑफ इण्डिया* । मुंशीराम मनोहरलाल प्रकाशक।
6. राजवन्त राव, और प्रदीप कुमार राव। (2004)। प्राचीन भारतीय मुद्राएँ । मोतीलाल बनारसी दास।
7. एलन, जे। (1936)। *कैटलाग ऑफ दि क्वायन्स ऑफ एन्शिएन्ट इण्डिया* । ट्रस्टीज़ ऑफ दि ब्रिटिश म्यूज़ियम।
8. वर्मा, परिपूर्णानन्द। (2006)। प्रतीक शास्त्र । उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान।
9. विशुद्धिमग्ग। (n.d.)। बौद्ध ग्रंथ (14वाँ परिच्छेद)।

10. गुप्ता, पी. एल। (1969)। *क्वायन्स* । नेशनल बुक ट्रस्ट।

11. झा, डी. एन। (2018)। ऐतिहासिक रूपरेखा में प्राचीन भारत (तृतीय सं.)। मनोहर प्रकाशन।

12. चैपल, सी. के। (2000)। *हिंदूइज़्म एण्ड ईकोलॉजी: दि इंटरसेक्शन ऑफ़ अर्थ एण्ड एथिक्स* । हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

13. कोसंबी, डी. डी। (1956)। *एन इंट्रोडक्शन टु दि स्टडी ऑफ़ इंडियन हिस्ट्री* । पॉपुलर प्रकाशन।

14. केनोयर, जे. एम। (1998)। *एंशियंट सिटीज़ ऑफ़ दि इंडस वैली सिविलाइज़ेशन ।* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

15. रंगराजन, एल. एन। (संपा. और अनु.)। (1992)। कौटिल्य का अर्थशास्त्र । पेंगुइन बुक्स इंडिया।

16. थापर, आर। (2013)। *आवर पास्ट बिफोर अस: हिस्टोरिकल ट्रेडीशन्स ऑफ़ अर्ली इंडिया* । हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

17. गाडगिल, एम., और गुहा, आर। (2013)। *दिस फिसर्ड लैंड: एन इकोलॉजिकल हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया* (द्वितीय सं.)। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

18. अंतर सरकारी पैनल जलवायु परिवर्तन। (2022)। जलवायु परिवर्तन 2022: प्रभाव, अनुकूलन, और जोखिम (छठी मूल्यांकन रिपोर्ट के लिए कार्यकारी समूह II का योगदान)। https://www.ipcc.ch/report/ar6/wg2/।

वेबसाइट्स :-

1. https://m.rbi.org.in
2. https://www.classicalnumismaticgallery.com
3. https://coinindia.com
4. https://www.himvan.com
5. https://ancient-indian-coins.blogspot.com
6. https://en.wikipedia.org